ऋग्वेदका परिचय एवं वैशिष्ट्य

(श्रीराम अधिकारीजी, वेदाचार्य)

हजारसे भी अधिक शाखाओंमें विस्तृत वेद ऋक्, यजुः, साम और अथर्व नामसे प्रसिद्ध है। ऋग्वेदकी अध्ययन-परम्परा ऋषि पैलसे आरम्भ हुई है। छन्दोबद्ध मन्त्रोंसे इस वेदकी ग्रन्थाकृति आविर्भूत हुई है। महाभाष्यके आधारपर ऋग्वेदकी इक्कीस शाखाएँ होनेका उल्लेख है। सम्प्रति विशेषतया शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन और माण्डूकायन नामक पाँच ही उपलब्ध शाखाएँ प्रसिद्धिमें रही हैं। यद्यपि शाकलके अतिरिक्त अन्य चारों शाखाओंकी संहिता नहीं मिलती है; तथापि इनका अनेक स्थानोंपर वर्णन मिलता है। किसीका ब्राह्मण, किसीका आरण्यक तथा श्रौतसूत्र मिलनेसे पाँच शाखाएँ ज्ञात होनेकी पुष्टि होती है। जैसे कि शाकलके आधारपर ऋग्वेदका अन्तिम मन्त्र '**समानी व आकूतिः**' है, परंतु बाष्कलके आधारपर '**तच्छंयोरावृणीमहे**' अन्तिम ऋचा है। बाष्कल शाखाकी यह ऋचा ऋक्परिशिष्टके अन्तिम संज्ञानसूक्तका अन्तिम मन्त्र है। इसी सूक्तसे बाष्कल शाखा-सम्मत संहिता समाप्त होती है। शाकल शाखाके मन्त्रक्रमसे बाष्कलके मन्त्रक्रममें बहुत कुछ अन्तर मिलता है।

वर्तमानमें आश्वलायन शाखाके श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र ही मिलते हैं। इसी प्रकार शांखायन संहिताके ब्राह्मण और आरण्यक ही प्रकाशित हैं, परंतु संहिता नहीं मिलती। प्रकाशित शाकल शाखा और शांखायन शाखामें केवल मन्त्रक्रममें ही भेद है। जैसे शाकलमें ऋक्-परिशिष्ट और बालखिल्यसूक्त संहितासे पृथक् हैं, जबकि वे शांखायनमें संहिताके अन्तर्गत ही हैं। माण्डूकायन शाखाके भी ग्रन्थ आजकल उपलब्ध नहीं हैं। इन पाँच शाखाओंमें भी आज शाकल और बाष्कल शाखाएँ ही प्रचलित हैं। जिसमें मण्डल, सूक्त आदिसे विभाग किया हो, वह शाकल और जिसमें अष्टक-अध्याय-वर्ग आदिके क्रमसे विभाग किया गया हो, उसको बाष्कल कहते हैं, यह एक मत है। इन दोनों शाकल और बाष्कल शाखाओंके भेदक मण्डल, सूक्तक्रम, अध्याय और वर्गक्रमको छोड़कर एक ही जगह मण्डल-संख्या और अध्याय-संख्याओंका भी निर्देश प्राचीन ग्रन्थोंमें किया गया है। जैसे कि ऋग्वेदमें ६४ अध्याय, ८ अष्टक, १० मण्डल, २,००६ वर्ग, १,००० सूक्त, ८५ अनुवाक और १०,४४० मन्त्र होनेका उल्लेख विद्याधर गौडकृत कात्यायन श्रौतसूत्रकी भूमिकामें मिलता है। मण्डलमें सूक्तोंकी संख्या क्रमशः १९१, ४३, ६२, ५८, ८७, ७५, १०४, १०३, ११४, १९१ अर्थात् कुल १, ०२७ निर्धारित मिलती है। कात्यायनकृत चरणव्यूह परिशिष्टमें दस हजार पाँच सौ सवा अस्सी मन्त्र होनेका उल्लेख मिलता है। सूक्तोंकी संख्या शाखा-भेदके कारण न्यूनाधिक देखी जा सकती है। इन सूक्तोंके अतिरिक्त अष्टम मण्डलके बीच ४३ सूक्तसे ५९ सूक्ततक पढ़े गये ११ बालखिल्य सूक्त मिलते हैं। स्वाध्यायके अवसरपर इन सूक्तोंका पाठ करनेकी परम्परा ऋग्वेदी विद्वानोंकी है। प्राप्त शाखाओंमेंसे शाकल शाखाकी विशिष्ट उच्चारण-परम्परा केरलमें रही है। आश्वलायन और शांखायन शाखीय गुर्जर (गुजरात)-में ब्राह्मण-परिवार मिलते हैं।

पश्चिमके शोधकर्ताओंके विचारमें ऋग्वेदके प्रथम और दशम मण्डल अर्वाचीन हैं। इस विचारकी पुष्टिके लिये उनका तर्क है कि द्वितीयसे नवम मण्डलोंकी अपेक्षा प्रथम और दशम मण्डलोंमें भाषागत विभिन्नता,

छन्दोगत विशिष्टता, देवसम्बद्ध नूतनता और विषय-वस्तुओंकी नवीनता दिखायी पड़ती है। द्वितीयसे नवमतकके मण्डलोंमें रेफ मिल जाता है तो अवशिष्ट मण्डलमें रेफके स्थानपर लकार लिखा हुआ मिलता है। वैसे ही इन्द्र, मित्र, वरुण आदि देवोंके स्थानमें श्रद्धा, मन्यु-जैसी भावनाओंको देव मानना प्रथम और दशम मण्डलोंकी विशेषता है। परंतु ये तर्क और अनुशीलन प्रथम और दशम मण्डलको अर्वाचीन सिद्ध करनेके लिये असमर्थ हैं, क्योंकि इनका खण्डन सहजरूपमें हो सकता है। पृथक्-पृथक् मण्डलकी अलग विशेषता रहना स्वाभाविक है और 'अभिमानीव्यपदेश' सिद्धान्तके आधारसे कोई जीव या वस्तु देव हो सकता है। सबसे प्रमुख बात तो वेदका कर्ता और रचनाकाल असिद्ध होनेसे अपौरुषेय वेदकी प्राचीनता और अर्वाचीनता कही नहीं जा सकती। ऋग्वेदके सम्बन्धमें उल्लेखनीय तथ्य तो यह है कि संसारके सभी लोग इस वेदको विश्वके सर्वप्राचीन ग्रन्थके रूपमें ग्रहण करते हैं। यह बात भारतीयोंके लिये गौरव रखती है।

४४ अक्षरोंसे बननेवाली त्रिष्टुप् छन्द, २४ अक्षरोंकी गायत्री छन्द और ४८ अक्षरोंकी जगती छन्द प्रधानतासे पूरी ऋग्वेदकी संहितामें हैं। चार पादवाले, तीन पादवाले और दो पादवाले मन्त्र इसमें देखे जा सकते हैं। दो पादवाली ऋचाएँ अध्ययन-कालमें चतुष्पदा और यज्ञके अवसरपर द्विपदा मानी जाती हैं। दो पादवाली ऋचाको चतुष्पदा करनेके लिये प्रगाथ किया जाता है। अन्तिम पादको पुनः अभ्यास करके चार पाद बनानेकी प्रक्रिया प्रगाथ है।

यह विशेष गौरवपूर्ण तथ्य है कि मात्र भारत ही नहीं, अपितु विश्वके लिये ऋग्वेद ज्ञान, विज्ञान और ऐतिहासिक तथ्य एवं सांस्कृतिक मूल्योंके लिये धरोहर है। इसमें अनेक सूक्तोंके माध्यमसे रोचक एवं महत्त्वपूर्ण विषयका प्रतिपादन किया गया है। कतिपय सूक्तोंमें दानस्तुतिका प्रतिपादन मिलता है। ऐसे सूक्त ऋक्सर्वानुक्रमणिकाके आधारपर २२ हैं, परंतु आधुनिक गवेषक ६८ सूक्त होनेका दावा करते हैं। आधुनिक इतिहासकारोंका मानना है कि इन मन्त्रोंमें ऋषियोंने दानशील राजाकी दानमहिमा गायी है। परंतु वैदिक सिद्धान्तकी दृष्टिसे अपौरुषेय वेदके आधारपर ये दानस्तुतियाँ प्ररोचना (प्रशंसा)-के रूपमें स्वीकार्य हैं। इसमें प्रबन्ध-काव्य एवं नाटकोंके साथ सम्बन्ध जोड़नेवाले लगभग बीस सूक्त मिलते हैं। कथनोपकथनके प्राधान्यसे इन सूक्तोंको 'संवादसूक्त' नाम दिया गया है। इनमेंसे तीन प्रसिद्ध, रोचक एवं नैतिक मूल्यप्रदायक आख्यायिकाओंसे जुड़े संवादसूक्त मिलते हैं। वे पुरूरवा-उर्वशी-संवाद (ऋक्० १०।८५), यम-यमी-संवाद (ऋक्० १०।१०) और सरमा-पणि-संवाद (ऋक्० १०।१३०) हैं। पुरूरवा एवं उर्वशीकी कथा रोमाञ्चक प्रेमका प्राचीनकालिक निदर्शन है, जिसमें स्वर्गकी अप्सरा पृथ्वीके मानवसे विवाह करती है। सशर्त किया हुआ यह विवाह शर्तभंगके बाद वियोगमें परिणत होता है। स्वर्गकी अप्सरा उर्वशी वापस चली जाती है। सूक्तमें कुछ कथन पुरूरवाके और कुछ कथन उर्वशीके देखे जा सकते हैं। वैसे ही यमी अपनी काम-इच्छाएँ अपने ही भाई यमसे पूरी करनेके लिये प्रयास करती है। नैतिक एवं चारित्रिक उदात्तताससे ओतप्रोत यम यमीको दूसरा पति ढूँढ़नेका परामर्श देकर भाई-बहनके रक्त-सम्बन्धको पवित्र एवं मर्यादित करता है। यह आर्योंकी महत्त्वपूर्ण संस्कृति रही है। इसी तरह ऋग्वेदीय सामाजिक विशेषता प्रस्तुत करनेवाला सरमा-पणि-संवाद सूक्त है। जिसमें पणि लोगोंके द्वारा आर्य लोगोंकी गायें चुराकर कहीं अँधेरी गुफामें रखनेकी आख्यायिका आयी है। इन्द्रने अपनी शुनी (कुत्ती) सरमाको पणियोंको समझानेके लिये दौत्यकर्म सौंपा। उसके बाद सरमा आर्य लोगोंके पराक्रमकी गाथा गाकर पणियोंको धमकाती है। इसी प्रकारकी सामाजिक स्थितिका बोध ऋग्वेदीय सूक्तोंसे कर सकते हैं।

शाकल संहिताके अन्तमें ऋक्परिशिष्ट नामसे ३५ सूक्त संगृहीत किये गये हैं। इनमेंसे चर्चित सूक्त हैं—श्रीसूक्त, रात्रिसूक्त, मेधासूक्त, शिवसङ्कल्पसूक्त तथा संज्ञानसूक्त। ये सूक्त ऋक्संहिताके विविध मण्डलोंमें पढ़े गये हैं। '**सितासिते सरिते यत्र संगते**—(ऋक्परिशिष्ट २२ वाँ) सूक्त स्कन्दपुराणके काशीखण्ड (७। ४४) और पद्मपुराण (६। २४६। ३५)-में उद्धृत है। पुराणके इन दोनों स्थानोंपर यह मन्त्र प्रयागपरक अर्थ देता है अर्थात् प्रयागमें मिलनेवाली सित (गङ्गा) और असित (यमुना)-के संगम-तीर्थकी महिमा भी इससे ज्ञात होती है।

ऋग्वेदकी यज्ञपरता और ब्राह्मण-ग्रन्थ

यजुर्वेद यज्ञका मापन करता है। ऋग्वेद और सामवेद यज्ञमें आहूत देवोंकी प्रसन्नताके लिये शस्त्र और स्तोत्र बतलाते हैं। अथर्ववेद यज्ञमें अनुशासनका पालन करवाता है। इस तरह यज्ञका पूर्ण स्वरूप चारों वेदोंसे सम्पन्न किया जाता है। इसके लिये ब्राह्मण-ग्रन्थ मन्त्र-विनियोजनपूर्वक कर्मोंके प्रख्यापन करते हैं। '**स्तुतमनुशंसति**' इस ब्राह्मणवाक्यके निर्देशानुसार

होतृगण ऋग्वेदीय सूक्तोंके शंसनसे देवोंकी स्तुति करते हैं। होतृगणमें होता, मैत्रावरुण, अच्छावाक और ग्रावस्तुत वैदिक नामवाले चार ऋत्विज् रहते हैं। ऋग्वेदके ऐतरेय और शांखायन ब्राह्मण मिलते हैं। ये ब्राह्मण यज्ञके प्रख्यापनके साथ-साथ रोचक आख्यायिकाओंसे मानवीय मूल्यों एवं कर्तव्योंका शिक्षण करते हैं। ४० अध्याय, ८ पञ्चिका और २८५ कण्डिकाओंमें विभक्त ऐतरेय ब्राह्मण होतृगणसे सम्बद्ध शस्त्रशंसनादि कार्योंका विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है। प्रत्येक पाँच अध्याय मिलाकर निर्मित पञ्चिकाके अन्तर्गत प्रथम और द्वितीय पञ्चिकामें सभी यागोंके प्रकृतिभूत अग्निष्टोम (सोमयाग)-में होतृगणके विधि-विधानों एवं कर्तव्योंका विवेचन है। इसी प्रकार तृतीय और चतुर्थ पञ्चिकामें प्रातः, माध्यन्दिन तथा तृतीय सवन (सायं-सवन)-पर शंसन किये जानेवाले बारह शस्त्रोंका वर्णन मिलता है।

पञ्चम एवं षष्ठ पञ्चिकामें द्वादशाह (सोमयाग) एवं अनेक-दिन-साध्य सोमयागपर हौत्रकर्म निरूपित है। सप्तम पञ्चिका राजसूय यागके वर्णनके क्रममें शुनःशेपका आख्यान विस्तृतरूपसे प्रस्तुत करती है। यह आख्यान अत्यन्त प्रसिद्ध है। अन्तिम अष्टम पञ्चिकामें ऐतिहासिक महत्त्ववाले 'ऐन्द्र महाभिषेक'-जैसे विषय देखनेमें आते हैं। इसी 'ऐन्द्र महाभिषेक'-के आधारपर चक्रवर्ती नरेशोंके महाभिषेकका रोचक प्रसंग आया है। इस प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण प्रमुख रूपसे सोमयागमें हौत्रकर्म बतलाता है।

३० अध्यायों एवं २२६ खण्डोंमें विभक्त ऋग्वेदका दूसरा शांखायन ब्राह्मण लम्बे-लम्बे गद्यात्मक वाक्योंमें अपने प्रतिपाद्योंका निरूपण करता है। इस ब्राह्मणको 'कौषीतकि ब्राह्मण' भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें अनेक आचार्योंके मतोंका उल्लेख करके कौषीतकिका मत यथार्थ ठहराया गया है। विषय-वस्तुकी दृष्टिसे यह ब्राह्मण ऐतरेयका ही अनुसरण करता है। इसके अनुशीलनसे महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। जैसे—उदीच्य देश संस्कृतका केन्द्र है, इस देशके भ्रमणका प्रसंग, रुद्रकी महिमा वर्णन, '**यज्ञो वै विष्णुः**'के आधारपर विष्णुको उच्चकोटिमें रखनेका प्रसंग, इन्द्रद्वारा वृत्तको मारनेके लिये महानाम्नी साम-मन्त्रोंको पढ़ना तथा शक्वरी ऋचाओंकी निरुक्ति एवं महत्त्वका प्रख्यापन आदि इस ब्राह्मणके उल्लेख्य विषय हैं।

ऋग्वेदके ऐतरेय और शांखायन नामके दो आरण्यक प्रसिद्ध हैं। प्रथम ऐतरेय आरण्यकमें अवान्तर पाँच आरण्यक भाग हैं, जिनमेंसे प्रथम आरण्यकमें 'गवामयन' नामक सत्रयागके अङ्गभूत महाव्रत-कर्मका वर्णन है। द्वितीय आरण्यकमें प्राणविद्या एवं पुरुष आदिका विवेचन है। इसीके अन्तर्गत 'ऐतरेय उपनिषद्' भी वर्णित है। तृतीय संहितोपनिषद् नामक आरण्यक संहिता, पद, क्रम, स्वर एवं व्यञ्जन आदिका निरूपण करता है। चतुर्थ आरण्यकमें महानाम्नी ऋचाओंका वर्णन और अन्तिम आरण्यकमें निष्केवल्य शस्त्र निरूपित है। इनमेंसे प्रथम तीनके द्रष्टा ऐतरेय, चतुर्थके आश्वलायन और पाँचवेंके शौनक माने गये हैं। पाँचवें आरण्यकके द्रष्टा शौनक और बृहद्देवताके रचयिता शौनकके बारेमें विद्वानोंका मतभेद रहा है। इसी तरह दूसरा शांखायन नामक आरण्यक ३० अध्यायोंमें विभाजित है और ऐतरेय आरण्यकका ही अनुसरण करता है। इस आरण्यकके १५वें अध्यायमें आचार्यके वंशवर्णनके क्रमानुसार आरण्यकद्रष्टा गुणाख्य शांखायन और उनके गुरुरूपमें कहोल कौषीतकिका उल्लेख मिलता है। अध्यात्मविद्याका रहस्य बतलानेवाले उपनिषद्-खण्डमें ऐतरेय उपनिषद् ऋग्वेदसे सम्बद्ध है। इसके अतिरिक्त सोलह अवान्तर उपनिषद् होनेका उल्लेख भी मिलता है।

ऋग्वेदीय वेदाङ्ग-साहित्य

कल्पशास्त्र श्रौत्रसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्रमें विभक्त हुआ है। ऋग्वेदीय कल्पशास्त्रका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—ऋग्वेदीय श्रौतसूत्रोंमें आश्वलायन और शांखायन मिलते हैं। क्रमशः १२ अध्याय और १८ अध्यायोंमें विभक्त इन दोनों श्रौत्रसूत्रोंमें पुरोऽनुवाक्या, याज्या, प्रतिगर-न्यूंख-जैसे विषयोंका निरूपण करके हौत्रकर्म बतलाया गया है। क्रमशः ४ और ६ अध्यायोंमें विभाजित आश्वलायन और शांखायन गृह्यसूत्र स्मार्त (गृह्य)-कर्मोंकी निरूक्ति करते हैं। इसी प्रकार २२ अध्यायोंमें विभक्त आश्वलायन धर्मसूत्र ऋग्वेदीय धर्मसूत्र माना गया है।

कुछ लोग पाणिनीय शिक्षाको ऋग्वेदकी शिक्षा मानते हैं तो कुछ लोग इसको सर्ववेद-साधारण मानते हैं। शौनक-शिक्षा और वासिष्ठ-शिक्षाको भी ऋग्वेदीय शिक्षाके रूपमें लिया जा सकता है। शौनक-शिक्षाके मङ्गलाचरण-श्लोकमें '**प्रणम्यर्क्षु प्रवक्ष्यामि**' का उल्लेख होनेसे इसको ऋग्वेदीय शिक्षा मानना उपयुक्त ही है। ६७ श्लोकोंसे रचित

शौनकीय शिक्षा ऋग्वेदसे सम्बद्ध स्वर-व्यञ्जन तथा उच्चारणकी व्यवस्था बतलाती है।

उपाङ्ग ग्रन्थके रूपमें प्रसिद्ध प्रातिशाख्य साहित्यमें ऋग्वेद-सम्बद्ध प्रातिशाख्य ऋक्प्रातिशाख्य है। १८ पटलोंमें विभक्त यह प्रातिशाख्य स्वर, व्यञ्जन, स्वरभक्ति तथा संधि-जैसे व्याकरणगत विषयोंका निरूपण करता है। इसके रचयिता आश्वलायनके गुरु शौनक माने गये हैं। इस प्रातिशाख्यमें ऐतरेय आरण्यकके अन्तर्गत संहितोपनिषद् आरण्यकका अनुसरण किया हुआ मिलता है।

वस्तुतः विश्वसाहित्यका सर्वप्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ होनेके कारण ऋग्वेद पाश्चात्त्य विद्वानोंके लिये भी अत्यन्त आदर तथा विश्वासके साथ श्रद्धास्पद रहा है। भाषावैज्ञानिक सिद्धान्तोंका तो यह आधारभूत ग्रन्थ ही माना जाता है। विश्वके प्राचीनतम इतिहास, संस्कृति, भाषाशैली, नृवंशशास्त्र, भौगोलिक स्वरूप तथा सभ्यताको एकमात्र लिपिबद्ध अभिलेख होनेके कारण पाश्चात्त्य विद्वानोंने इसका अनुशीलन अतिशय परिश्रमसे किया है।

परंतु हम भारतीयोंकी दृष्टिसे तो यह अपौरुषेय शब्दराशि समस्त ज्ञान-विज्ञानोंकी उपदेष्ट्री तथा विश्वकी संविधात्री है।

वेद कथाङ्क (कल्याण-गीताप्रेस)